मंथन

26 जनवरी, 2023

सीएसआईआर
CSIR
भारत का नवाचार इंजन
The Innovation Engine of India

स्टाफ क्लब
सीएसआईआर- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान
पालमपुर, हिमाचल प्रदेश, भारत

CSIR-IHBT 1983
Innovation Hub for Better Tomorrow

26 जनवरी, 2023

मंथन

स्टाफ क्लब, सी.एस.आई.आर.- हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर

वर्ष 17 **अंक 1** **26 जनवरी, 2023**

आमुख

स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" 2023 का पहला अंक आपके समकक्ष प्रस्तुत है। आपके अन्दर विद्यमान वे प्रतिभायें, जिन्हें आप बोल कर या अन्य किसी रूप में व्यक्त नहीं कर सकते, उन्हें मंथन के माध्यम से लघुलेख, कथा, कलाकृति, रेखाचित्र, कविता या अन्य किसी भी रूप में व्यक्त कर सकते हैं तथा छिपी प्रतिभा को निखार सकते हैं।

"मंथन की भावना है-भावनाओं का मंथन"

स्टाफ क्लब के सभी सदस्यों एवं उनके परिजनों से निवेदन है, कि वे मंथन के आगामी अंकों के लिए भी प्रविष्टियां देते रहें, ताकि मंथन के आने वाले अंक समय से प्रकाशित किया जा सके।

इस अंक में प्रविष्टियां देने एवं सहयोग करने वालों का स्टाफ क्लब की ओर से धन्यवाद।

संपादक: अरुण कुमार

संकलन: सौरभ शर्मा

विषय सूची

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	माँ जैसा कोई नहीं	सहदेव चौधरी	03
2.	विश्वास	अवनेश कुमारी	04
3.	पथ पे निरंतर	स्मिता कपूर	05
4.	हमारी धरोहर -"हिंदी"	मिनाक्षी	06
5.	कविता की प्रतीक्षा	ज्योत्सना	08
6.	घर याद आता है	शिव शंकर यादव	09
7.	मसान	ज्योत्सना	10
8.	गुमनाम	साहिबा शर्मा	11
9.	मसालों की रानी –इलायची	मीनाक्षी रावत, किरण देवी, रोहित जोशी	12
10.	कांगड़ा के प्रसिद्ध मंदिर	मिनाक्षी	14

<u>हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान के परिवार के बच्चों की कृतियाँ</u>

आकर्ष पांडे	19
अनिल कुमार	20
निहारिका गुप्ता	21
वामीका पांडे	22
ज्योत्सना	23
घृताशी नड्डा	24
दीप्तांशु गाइन	25
देवांगना गाइन	26
दिव्यम नड्डा	27
प्रिशा	28
वैदिक सूद	29
प्रिशा	30

माँ जैसा कोई नहीं

माँ संवेदना है, भावना है, ऐहसास है।
माँ जीवन के फूलों में खुशबू का वास है॥
माँ पूजा की थाली है, मंत्रों का जाप है।
माँ रेगिस्तान में नदी है, सर्दी में भाप है॥

माँ त्याग है, तपस्या है और सेवा है।
माँ साधना है , अनुष्ठान है, मीठा सा कलेवा है॥
माँ कलम है , दवात है और स्याही है।
माँ परमात्मा की स्वयं एक गवाही है॥

माँ मथुरा है, काशी है और चारों धाम है।
इस दुनिया की सभी माताओं को मेरा प्रणाम है॥
माँ प्रथ्वी है , जगत है और धुरी है ।
माँ के बिना जीवन की कल्पना अधूरी है ॥

जब- जब ये तकदीर दगा देती है ।
माँ की मुस्कराहट उम्मीद जगा देती है ॥

अपनी सारी खुशियाँ हम पर लुटा देती है।
ये माँ इतना सब कैसे कर लेती है ॥

मैं इस दुनियाँ में महफूज रहता हूँ ।
क्योंकि मैं माँ की दुआओं से जीता हूँ ॥
माँ का महत्व कम हो नहीं सकता ।
माँ जैसा दुनियाँ में कोई हो नहीं सकता ॥

सहदेव चौधरी

विश्वास

विश्वास में खड़े रहो।
जब आप अपना रास्ता साफ़ नहीं देख पा रहे हैं।
तब भी विश्वास में खड़े रहो।
जब आपको लगता है कि आप एक और दिन का सामना नहीं कर सकते हैं।

तब भी विश्वास में खड़े रहो।
जब आपकी आंखों से आंसू बहना चाहें।
तब भी विश्वास में खड़े रहो।
यह सोचते हुए कि हमारा भगवान हमेशा हमारे साथ है।
विश्वास में खड़े रहो।
यहां तक कि जब आपको लगता है कि सारी उम्मीद खत्म हो गई है।

तब भी विश्वास में खड़े रहो।
यह विचार करते हुए कि वह आपके को सहारा देने के लिए हमेशा मौजूद है।
विश्वास में खड़े रहो।
जब आपको हार मानने का मन करे।
तब भी विश्वास में खड़े रहो।
क्योंकि वह वहां है... कह रहा है, "जरा ऊपर देखो"
विश्वास में खड़े रहो।

ऐसे समय में भी जब आप बिल्कुल अकेला महसूस करते हैं
तब भी विश्वास में खड़े रहो।
डटे रहो और मजबूत बनो, क्योंकि वह अभी भी सिंहासन पर विराजमान है
विश्वास में खड़े रहो।
भले ही यकीन करना मुश्किल हो।
तब भी विश्वास में खड़े रहो।

ऐसा यकीन कर कि वह आपकी स्थिति को अचानक बदल सकता है
विश्वास में खड़े रहो।
उस समय भी जब आपको लगता है कि प्रार्थना करना व्यर्थ है।
तब भी विश्वास में खड़े रहो।

और विश्वास करें कि उसने पहले ही आपके लिए रास्ता बना लिया है।
विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।
इसलिए विश्वास में खड़े रहो।

अवनेश कुमारी

पथ पे निरंतर

अपने पथ पे निरंतर हैं, माना पथ पे बहुत कंकड हैं
यही हमें मजबूत बनाएँगे, हम गिर कर उठ कर दोबारा चल कर दिखाएंगे

इमानदारी का घर बनाएँगे फिर चाहे सब से अलग हो जाएंगे
इक सुकून होगा अपना चिरत्र ही अपना जुन्नूं होगा

देखने और कहने वाले देखते - कहते रह जाएंगे
हम बस हर हाल में अपने व्यक्तित्व के साथ जियेंगे और अंत में सुकून से इस दुनिया को अलविदा कह जाएँगे

मुसीबतें भले ही लाख हों पर शिकन का न कोई निशाँ हो
मुस्कुराहटें बिखारते जायें चाहे जीवन में आते कितने उतार - चढ़ाव हों
पथ पे निरंतर हों मंजिल के रस्ते हों, हस्ते हस्ते कट जाएँ दिन, मंजिल तो मिल ही जाएगी इक दिन

भटकना भी है जरुरी सही गलत की तभी पहचान होगी
मंजिल क़दमों पे होगी जब मेहनत की बरसात होगी

अपने पथ पे निरंतर हैं माना पथ पे बहुत कंकड हैं
यह ही हमे मजबूत बनाएँगे, हम गिर कर उठ कर दोबारा चल कर दिखाएंगे

स्मिता कपूर

हमारी धरोहर -"हिंदी"

हिंदी हमारी मात्र भाषा है ,और यह हम सब भलि-भांति जानते भी हैं | लेकिन इसका प्रयोग करने से पता नहीं इतना क्यों डरते हैं।

सब विभाग, संस्थान , विश्वविद्यालय अपने कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित तो करते हैं, लेकिन फिर भी जब कहीं प्रस्तुतीकरण, या व्याख्यान की बात आती है, तो वह केवल अंग्रेजी में ही दिया जाता है। अब व्याख्यान सुनने वाले , प्रस्तुतीकरण देखने वाले, सब सुन- देख तो रहे होते हैं,लेकिन समझ किसी -किसी को ही आती है। क्यूंकि अधिकांश दर्शकों को सिर्फ हिंदी ही समझ आती है ,अब अंग्रेजी सब को तो नहीं आती। प्राध्यापक अपना सारा व्याख्यान इंग्लिश में ही देना पसंद करते हैं ,चाहे किसी को समझ आये या न आये ,क्यों वह यहाँ हिंदी का प्रयोग नहीं करते ? कुछ विद्यालय तो ऐसे हैं, जहाँ इतिहास का व्याख्यान भी प्राध्यापक इंग्लिश में ही लेते हैं। भारत के उच्च विश्वविद्यालयों में भी अभी तक पूर्ण रूप से हिंदी लागू नहीं हो पाई है। भारत की अपनी भाषा होते हुए भी हम अंग्रेजी को ही ज्यादा महत्व देते हैं। शायद हर कोई अपनी सच्चाई से भागता फिर रहा है, या हिंदी बोलने में शर्म महसूस करता है। हिंदी और संस्कृत हमारी यानि की भारत की धरोहर है, और यह हमारी शान है, हमारी पहचान है । इसमें शर्माना कैसा।

पहला उदहारण देना चाहूंगी : आपने अक्सर देखा होगा, कोई भी विदेशी जब भारत आता है, तो वह हमेशा अपनी भाषा यानि की अंग्रेजी में ही बात करता है, हिंदी में नहीं, और वहीँ दूसरी तरफ हम अधिकतर भारतीय अगर उनके द्वारा पूछे गए अंग्रेजी सवाल का जवाब अंग्रेजी में न दे पाएं तो इसमें हम अपनी बेज़्ज़ती महसूस करते हैं। एक सवाल में यहाँ पूछना चाहूंगी की यह बेज्जती कौन करता है ? उत्तर होगा हम खुद अपनी बेज्जती करते हैं। कई लोग तो इतना सीरियस हो जाते हैं की इस चक्कर में अंग्रेजी सिखने निकल पड़ते है ,उन्हें ऐसा लगता है की अंग्रेजी सीखना ही एक मात्र विकल्प है ,और यह तो आनी ही चाहिए। जिसके लिए काफी सारे टेस्ट भी होते हैं जैसे की IELTS , TOFEL आदि। अंग्रेजी सीखो मगर हिंदी में बोलने की शर्म न करो। क्या आपके दिमाग में कभी यह सवाल नहीं उठता की विदेशी यहाँ आ के हिंदी में क्यों नहीं बात करते ? जबकि अगर हम लोग विदेश जाते हैं, तो हमे अंग्रेजी सीखनी पड़ती हैं। इसका उल्टा क्यों नहीं होता ? क्यों जब भी कोई विदेशी भारत में आता है, तो हिंदी में क्यों बात नहीं करता, क्यों उनके लिए हिंदी अनिवार्य नहीं ? अगर आप सब अपने आप से यह सवाल करेंगे तो जवाब निःसंदेह आपकी अंतरात्मा को बेचैन कर के रख देगा।

दूसरा उदाहरण : अक्सर आपने देखा होगा आजकल जब भी किसी के घर बच्चा पैदा होता है, तो माँ -बाप अपनी बोली छोड़ के, अपनी भाषा छोड़ के, बच्चे को शुरू से इंग्लिश सीखाने में लग जाते हैं। इससे बच्चा अपने मुँहबोली भाषा कभी बोल ही नहीं पाता है, और बस अंग्रेजी का हो के रह जाता है। आजकल हमारी संस्कृति में माता- पिता की जगह मॉम- डैड ने ले ली है, सॉरी कहना सब को आता है, लेकिन क्षमा कीजिये या माफ़ करें बहुतों को तो बोलना भी नहीं आता होगा। और शर्म की बात यह है की इसे सीखने वाले हम खुद ही हैं। हमारे भारत में बहुत सी बोलियां बोली जाती हैं मगर हिंदी हमारी मात्र एक भाषा है ,जो हर भारतवासी को जोड़ती है। अपनी संस्कृति को पहचानो। इसका प्रचार करो ,इसे अपनाओ ताकि जब भी कोई भारतीय , विदेश जाए तो वहां हिंदी में बात करने में गर्व महसूस करे ,शर्म नहीं और सामने वाले भी हिंदी में जवाब दे। हम पहले खुद हिंदी अपनाए , फिर देखें हिंदी भाषा सारी दुनिया अपनाएगी। हिंदी में कार्य केवल दफ्तर तक ही सिमित न रखें इसका प्रयोग एवं प्रचार भी हर जगह करें।

हिन्दी हैं हम हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा हमारा

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा हमारा

मिनाक्षी

कविता की प्रतीक्षा

एक कालांतर के बाद
जब आकाश की निलिमा होगी गाढ़ी

और एक परिधि में सिमट जाएगी पृथ्वी
प्रेम की त्रासदीओं में आएगी भिन्नता

समर्पण में बदल जाएगी प्रत्येक पीड़ा
नाज़ुक मौन के होगें सहस्त्र क्षण

प्रत्येक मुस्कान पर भावुक होगा जीवन
और जब सदियों कि यातनाएं

हो जाएगी अर्थहीन
निर्जन वन में

एक सुन्दर फूल खिलेगा
एक कोरा कागज रचेगा नई सभ्यताएं

और टूटी हुई कलम से हस्ताक्षर होगा
एक कालांतर के बाद...

मैं लिखूंगी कविताएँ
जब दुनिया बची रहेंगी
सिर्फ़ स्मृतियों और शब्दों में।

ज्योत्सना

घर याद आता है

जब हम रो नहीं पाते
सुख से सो नहीं पाते।
जब हम खो नहीं पाते
तब घर याद आता है॥

जब हम टूट जाते है
अपने रूठ जाते है।
जब सपने सताते है
तब घर याद आता है॥

बच्चे रह नहीं पाते
बड़े हो नहीं पाते।
खड़े भी रह नहीं पाते
तब घर याद आता है॥

किसी से कह नहीं पाते
अकेले रह नहीं पाते।
हर किसी को सह नहीं पाते
तब घर याद आता है॥

जब भी फल नहीं मिलता
जब कोई हल नहीं मिलता।
मन से मन नहीं मिलता
तब घर याद आता है॥

शिव शंकर यादव

मसान

दूर कहीं मसान की आग जल रही है
मृदंग बजता है, उत्सव मनता है,
और धीरे धीरे सब राख हो जाता है,

सूने मरघट पर लेटी
एक अधखिली नारी अकेली,
सचमुच नितांत अकेली,

जीने की चाह ने जिसे
अधजला अवशेष बना दिया
और पोखर के पानी में विसर्जित

अर्ध मुरझाए उदास फूल
धुंधली चांदनी के बीच
गंगा की देह में समाते जा रहे हैं

अनगिनत हादसों का असर,
बुरे स्वप्नों का मुंह चिढ़ा रहा है
एक एक आँसू का क़तरा

प्रायश्चित की मांग कर रहा है
लेकिन पश्चाताप का क्षण असमीपस्थ है
शायद इस युग की पीड़ा का आधार

मानवता की भीख नहीं,
विवशता के अंत की प्रार्थना कर रहा है।

ज्योत्सना

गुमनाम

हां,मेरे सपने हैं बोहोत बड़े,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

मुझे करना है अभी बोहोत कुछ,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

मुझे उड़ना है अभी खुले आसमानों में,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

मुझे छूना है अभी ऊंचे शिखरों को ,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

खुशियों की वो किरण बनके,करना है दूर अंधेरे को,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

मुस्कान लानी है अभी अपनों के होंठों पर,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

खिलना है अभी उन वसंत के फूलों की तरह,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

बहना है अभी गहरे समंदर में उन लहरों की तरह,
पर मुझे गुमनाम ही रहने दो।

नाम बन जाने का डर नहीं,
नाम जो बन गया, तो बदनाम भी होजाएगा,
इसलिए ,मुझे बस गुमनाम ही रहने दो।

साहिबा शर्मा

मसालों की रानी –इलायची

इलायची अदरक (Zinziberaceae) परिवार की सदस्य है, जिसके सूखे फल मसालों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। यह विश्व के प्राचीनतम मसालों में से एक है तथा मसालों की श्रेणी में केसर और वनीला के बाद तृतीय सर्वाधिक लोकप्रिय और मूल्यवान मसाला है। भारतीय व्यंजनों में इलायची का उपयोग व्यापक रूप में होता है। इस बारहमासी पौधे का उल्लेख प्राचीन भारतीय साहित्य में मिलता है और इसे संस्कृत में 'इला' कहा जाता है। इलायची को वैदिक काल (3000 ईसा पूर्व) तैत्रेय संहिता में एक विवाह समारोह के दौरान बलि की आग में डाले जाने वाले तत्वों में सूचीबद्ध किया गया है। इसके अलावा इलायची को प्राचीन भारतीय आयुर्वेदिक साहित्य (1400-600 ईसा पूर्व) चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में भी संदर्भित किया गया है। इलायची का उपयोग भारतीय आयुर्वेदिक, यूनानी तथा होम्योपैथी चिकित्सा प्रणाली में चार ईसा पूर्व में त्वचा और मूत्र संबंधी समस्याओं को ठीक करने के साथ-साथ मोटापा कम करने के लिए भी किया जाता था। संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन (UNCTAD) की गणना के अनुसार विश्व में प्रतिवर्ष 500 हज़ार मीट्रिक टन इलायची का उत्पादन होता है, जिसकी वैश्विक कीमत 1.5 से 2.0 अरब अमेरिकी डॉलर के बराबर है। विश्व में इलायची के कुल उत्पादन का 60 प्रतिशत भोजन में उपयोग होता है। सीएसआईआर-हिमालयन जैवसंपदा प्रोद्योगिकी संस्थान, पालमपुर ने हिमाचल प्रदेश से लुप्त होती जा रही इलायची को प्रवर्धित कर पुनर्स्थापित करने के लिए कदम उठाए हैं तथा प्रदेश की जलवायु के अनुकूल प्रजातियों को संस्थापित किया है। इलायची के रूप में जाना जाने वाला यह अद्भुत मसाला दो किस्मों में आता है:-

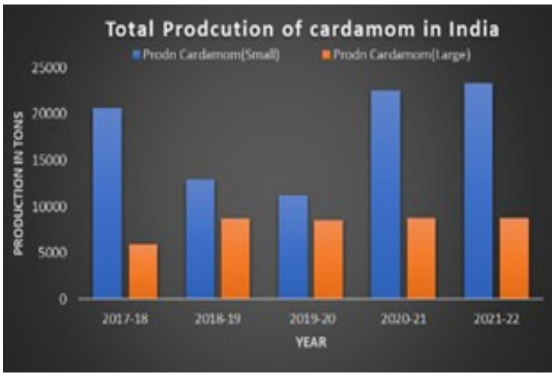

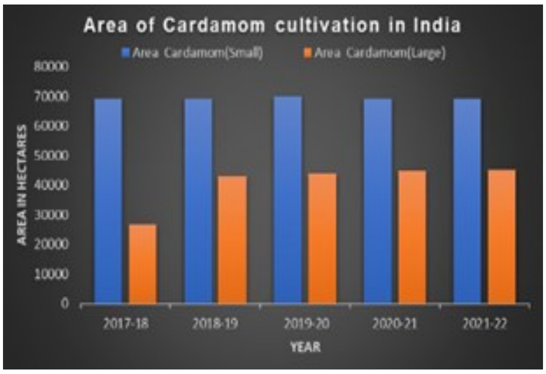

इलायची के प्रकार

1. छोटी इलायची:- इसे "असली इलायची" तथा "हरी इलायची"के रूप में भी जाना जाता है। यह हरी, छोटी और पूरी तरह से सुपाच्य है। इस पौधे का वैज्ञानिक नाम *Elettaria cardamomum* (L.)

Maton. है। मसालों में ये स्वाद और खुशबू के मामले में बेजोड़ है। विश्व में भारत का छोटी इलायची के उत्पादन में सर्वोच स्थान है, और इसका कुल उत्पादन 38 हज़ार मीट्रिक टन होता है। हालांकि ग्वाटेमाला इसका सबसे बड़ा निर्यातक देश है।

2. बड़ी इलायची:- बड़ी इलायची, हरी इलायची की तुलना में तीन गुना बड़ी है, जो एक दिलचस्प तथ्य है। इसके बीजकोष गहरे भूरे रंग के, बड़े तथा इसकी बाहरी परत कठोर होती है, और केवल इसके बीज खाए जा सकते हैं। इसे वैज्ञानिक रूप से *Amomum subulatum* Roxb. के नाम से जाना जाता है, यह मुख्य रूप से पूर्वी हिमालय में उगाया जाता है, जिसमें नेपाल, सिक्किम और भूटान शामिल हैं। इलायची के इस पौधे की ऊंचाई पांच फीट तक पहुंच सकती है। अपने आ कार के कारण, बड़ी इलायची की फली को अक्सर "विशाल इलायची" या "काली इलायची" के नाम से जाना जाता है।

उत्पत्ति-

हरी इलायची की उत्पत्ति दक्षिण-पश्चिम भारत में हुई है, जहां "इलायची हिल्स" अभी भी एक क्षेत्र है। हालांकि, काली इलायची चीन और पूर्वी हिमालय में प्रमुखतः मिलती है। वर्तमान में, इलायची भारत में सभी जगह उगाई जाती है।

गुण-

इलायची में विभिन्न प्रकार के चिकित्सीय गुण उपलब्ध हैं, जिनमें रोगाणु रोधक (एंटीसेप्टिक), प्रतिउद्वेष्टी (एंटीस्पास्मोडिक), तंत्रिकापेशीय (न्यूरोमस्कुलर), कामोत्तेजक, कफोत्सारक (एक्सपेक्टोरेंट), आंत्रकृमिघ्न (एंथेल्मिंथिक), मूत्रवर्धक और पेट संबंधी बीमारियों का निदान शामिल हैं। इसके अतिरिक्त इलायची का उपयोग पलक की सूजन, फुफ्फुसीय तपेदिक, दांतों और मसूड़ों के संक्रमण के इलाज के लिए भी किया जाता है। पारंपरिक तरीकों के अनुसार, यह सांप और बिच्छू दोनों के जहर को बेअसर कर सकता है। हेपेटोप्रोटेक्टिव वाष्पशील तेल के घटक, जैसे कि 1,8-सिनेओल, टेरपिनिन, टेरपिनॉल, सबिनेन, पिनेन और लिमोनेन, एक क्षुधावर्धक के रूप में काम करते हैं, हृदय और यकृत के लिए एक टॉनिक, और वे पित्त उत्सर्जन में सहायता करते हैं। इसके अतिरिक्त, इसका उपयोग औद्योगिक रूप से विभिन्न शीतल पेय जैसे, लस्सी, फ़लूदा, आइसक्रीम और फ्लेवर्ड मिल्क आदि बनाने में किया जाता है।

मीनाक्षी रावत, किरण देवी, रोहित जोशी

कांगड़ा के प्रसिद्ध मंदिर

हिमाचल प्रदेश का एक जिला कांगड़ा है जो भगवान की आस्था के लिए बहुत प्रसिद्ध है, कांगड़ा जिले की बात आती है तो वहां के प्रसिद्ध मंदिरों का ही नाम सबसे पहले जुबान में आता है। वैसे तो यहां की कांगड़ी चाय, धाम और किला भी मशहूर है, परंतू आज में आपको कांगड़ा के कुछ ऐसे मंदिरों के बारे में बताना चाहूंगी जो बहुत लोकप्रिय हैं और जिन की बहुत मान्यता भी है।

बैजनाथ मंदिर (भोले बाबा का द्वार), कांगड़ा जिला, हिमाचल प्रदेश।

बैजनाथ का आकर्षण मुख्य भगवान शिव का मंदिर है। यह माना जाता है कि त्रेता युग के दौरान, रावण ने अजेय शक्तियों के लिए कैलाश में भगवान शिव की पूजा की थी। भोलेनाथ शिवशंभु को प्रसन्न करने के लिए उन्होंने अपने दस सिर हवन कुंड में अर्पित किए। रावण के इस असाधारण कार्य से प्रभावित भगवान शिव ने न केवल उनके सिर को स्थापित किया बल्कि उन्हें अजेयता और अमरता की शक्तियां भी प्रदान कीं। जिसके बाद रावण ने शिव से लंका चलने की इच्छा जताई. रावण की इस इच्छा को पूरा करने के लिए भगवान शिव स्वयं शिवलिंग में परिवर्तित हो गये. रावण जब इस शिवलिंग को लंका ले जा रहा था तो उसे रास्ते में लघुशंका लगी और उसने इसे एक गडरिये को पकड़ा दिया. मान्यता है कि उस गडरिये ने इस शिवलिंग को जमीन पर रख दिया जिसके बाद यह रावण से नहीं उठा और और यहीं शिवलिंग स्थपित हो गया. मंदिर का निर्माण शक 1126 (सीई 1204) में भगवान वैद्यनाथ की भक्ति में दो भाइयों मन्युका और आहुका द्वारा किया गया था। बैजनाथ मंदिर से आधा किलोमीटर की दूरी पर पपरोला को जाने वाले पैदल रास्ते पर रावण का मंदिर और पैरों के निशान मौजूद हैं| बैजनाथ में एक भी सुनार की दुकान नहीं है। इस स्थान में सोना नहीं बेचा जाता। यह मंदिर काफी प्राचीन है, और श्रद्धालू यहां दूर से भोलेनाथ के दर्शन के लिए आते हैं| सावन के महीने में यहां मेले भी लगते हैं।

बृजेश्वरी माता मंदिर "कांगड़ा वाली माता"

ऐसी मान्यता है कि ,देवी सती ने अपने पिता के यज्ञ में भगवान शिव के सम्मान में स्वयं को बलिदान कर दिया। शिव ने उनके शरीर को अपने कंधे पर ले लिया और तांडव शुरू कर

दिया। उसे दुनिया को नष्ट करने से रोकने के लिए भगवान विष्णु ने अपने चक्र से सती के शरीर को 51 भागों में विभाजित कर दिया। इस स्थान पर गिरा था सती का बायां स्तन, और इस तरह यहां शक्तिपीठ मां बृजेश्वरी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कहा जाता है कि

मूल मंदिर कांगड़ा जिले में स्थित नगरकोट गांव में महाभारत के समय पांडवों द्वारा बनाया गया था। "कांगड़ा वाली माता" के नाम से यह मंदिर प्रसिद्ध है। मंदिर के अंदर देवी वज्रेश्वरी पिंडी के रूप में मौजूद हैं। मंदिर में भैरव बाबा का एक छोटा मंदिर भी है। मुख्य मंदिर के सामने ध्यानु भगत की एक मूर्ति भी मौजूद है। उसने अकबर के समय अपना शीश देवी को चढ़ाया था। जनवरी के दूसरे सप्ताह में आने वाली मकर संक्रांति भी मंदिर में मनाई जाती है। ऐसा कहा गया है कि, युद्ध में महिषासुर को मारने के बाद देवी को कुछ चोटें आई थीं। उन चोटों को ठीक करने के लिए देवी ने नागरकोट में अपने शरीर पर माखन लगाया था। इस प्रकार इस दिन को चिह्नित करने के लिए, देवी की पिंडी को मक्खन से ढक दिया जाता है और मंदिर में एक सप्ताह तक उत्सव मनाया जाता है।

श्री चामुंडा देवी मंदिर

"चामुंडा नंदिकेश्वर धाम" देवी दुर्गा का एक मंदिर है, जो उत्तरी भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले की धर्मशाला तहसील के पालमपुर शहर से 19 किमी दूर स्थित है। श्री चामुंडा नंदिकेश्वर धाम पौराणिक काल से शिव शक्ति का अद्भुत सिद्धवरदायी स्थान है। यहां जालंधर नामक असुर और महादेव के मध्य युद्ध के अवसर पर भगवती चामुंडा को अधिष्ठात्री देवी एवं रुद्रत्व पद प्राप्त हुआ था, जिससे ये क्षेत्र रुद्र चामुंडा रूप से भी प्रसिद्ध है। स्वर्णिम मन्वंतर में जब देवासुर संग्राम हुआ तो भगवती कौशिकी ने अपनी भृकुटी से चंडिका उत्तपन की और उससे चण्ड -मुंड असुरों का वध करने को कहा। तब चंडिका ने चण्ड -मुंड असुरों के साथ घोर संग्राम कर उनका वध कर दिया. देवी चण्डिका उन असुरों के सिरों को काट कर भगवती कौशिकी के पास ले आई। भगवती ने प्रसन्न होकर कहा की तुमने चण्ड -मुंड असुरों को मारा है अतः तुम्हारी संसार में चामुंडा नाम से प्रसिद्धि होगी. मान्यता है कि यहां जो भी मन्नत मांगी जाती है, वह सच हो जाती है। बहुत पुराना आदि हिमानी चामुंडा जो मूल मंदिर भी है, पहाड़ी की चोटी पर स्थित है, जिससे तीर्थयात्रियों तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है। इस प्रकार, इस मंदिर का निर्माण लगभग 400 साल पहले विश्वासियों की सुविधा के लिए किया गया था। एक लोककथा के अनुसार, 16वीं शताब्दी के एक राजा और एक पुजारी ने देवी चामुंडा से प्रार्थना की, और मूर्ति को अधिक सुलभ स्थान पर स्थानांतरित करने के लिए उनकी सहमति मांगी। किंवदंती बताती है कि देवी पुजारी के सपने में प्रकट हुईं और उन्हें उस सटीक स्थान का सुझाव दिया जहां से मूर्ति मिलेगी। राजा को इसके बारे में सूचित किया गया और उसके आदमियों ने प्राचीन मूर्ति को बरामद कर लिया और उसे उस स्थान पर स्थापित कर दिया जहाँ अब मंदिर बना हुआ है।

ज्वालामुखी माता मंदिर, ज्वाला जी

दुर्गा माता के सबसे महत्वपूर्ण शक्तिपीठों में से एक है। मान्यता है कि जब भगवान विष्णु ने भगवान शिव को तांडव करते हुए शांत करने के लिए मां सती के शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दिए, तो माता की जीभ यहां गिरी थी। जिन स्थानों पर टुकड़े गिरे, वहां इक्यावन पवित्र

'शक्तिपीठ' बने । मंदिर परिसर में युगों से सात स्वयं प्रकाशित ज्योतियाँ हैं। मुख्य मंदिर में स्थित ज्योति को मंदिर का देवता माना जाता है। यहाँ सदियों से कभी न बुझने वाली नीले रंग में ज्योति मंदिर में जलती रहती है। सदियों पहले एक चरवाहे ने पाया कि उसकी गाय का दूध हमेशा ख़तम हो जाता है । कारण जानने के लिए उसने गाय का पीछा किया। उन्होंने जंगल से एक लड़की को आते देखा, जो गाय का दूध पी रही थी, और फिर प्रकाश की एक चमक में गायब हो गई। ग्वाला राजा के पास गया और उसे कहानी सुनाई। राजा को इस पौराणिक कथा के बारे में पता था कि इस क्षेत्र में सती की जीभ गिरी थी। राजा ने उस पवित्र स्थान को खोजने का असफल प्रयास किया। कुछ साल बाद, चरवाहा फिर से राजा के पास रिपोर्ट करने गया कि उसने पहाड़ों में एक लौ जलती हुई देखी है। राजा को वह स्थान मिला और पवित्र ज्योति के दर्शन (दर्शन) हुए। उन्होंने वहां राजा भूमि चंद द्वारा एक मंदिर बनवाया और नियमित पूजा में शामिल होने के लिए पुजारियों की व्यवस्था की। ऐसा माना जाता है, कि पांडव बाद में आए और मंदिर का जीर्णोद्धार कराया। "पंजन पंजन पांडवन तेरा भवन बनाया" नामक लोकगीत इस विश्वास की गवाही देता है। ज्वालामुखी कई वर्षों से एक तीर्थस्थल रहा है। यहां हर साल नवरात्रों में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ रहती है, और माता के भंडारे हर समय लगे रहते हैं।

बगलामुखी माता मंदिर, बनखंडी

हिंदू पौराणिक कथाओं में मां बगलामुखी को दस महाविद्याओं में आठवां स्थान प्राप्त है। मां की उत्पत्ति ब्रह्मा द्वारा आराधना करने की बाद हुई थी। मान्यता है कि सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा का ग्रंथ एक राक्षस ने चुरा लिया और पाताल में छिप गया। उसे वरदान प्राप्त था कि पानी में मानव और देवता उसे नहीं मार सकते। ऐसे में ब्रह्मा ने मां भगवती का जाप किया। इससे बगलामुखी की उत्पत्ति हुई। मां ने बगुला का रूप धारण कर उस राक्षस का वध किया और बह्मा को उनका ग्रंथ लौटाया। इन्हें उत्तर भारत में पीताम्बरा माँ भी कहा जाता है। इन्हें पीला रंग अति प्रिय है, इसलिए इनके पूजन में पीले रंग की सामग्री का उपयोग ही होता है। देवी बगलामुखी का रंग स्वर्ण के समान पीला होता है। बगलामुखी देवी शक्ति की 10 हिंदू देवी में से एक हैं। बगलामुखी का मंदिर कांगड़ा के पास कोटला किले के प्रवेश द्वार पर पाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि बगलामुखी की पूजा न केवल शत्रुओं की शक्ति को कम करती है, बल्कि उन्हें असहाय भी बना देती है। बगलामुखी साधना और सिद्धि पूजा, भारत के हिमाचल प्रदेश राज्य के कांगड़ा जिले के बनखंडी गाँव के प्रसिद्ध बगलामुखी मंदिर में की जाती है। यहां कई महान हस्तियां हवन करवा चुकी है। जैसे की चुनावों में हार के बाद पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी, सांसद अमर सिंह, सांसद जया प्रदा, मनविंदर सिंह बिट्टा, कांग्रेसी नेता जगदीश अधिकार, भूपेंद्र हुड्डा, राज बब्बर की पत्नी नादिरा बब्बर, गोविंदा और गुरदास मान जैसी हस्तियां यहां आ चुकी हैं हैं। संकट के समय कॉमेडी किंग कपिल शर्मा भी यहां आ चुके हैं।

भागसू नाग मंदिर मैकलोडगंज, धर्मशाला

भगवान शिव को समर्पित भागसुनाग का मंदिर, मैक्लोडगंज से लगभग 2 किमी दूर, प्राकृतिक दृश्यों से भरा एक सुंदर गाँव है। मंदिर की कहानी एक दिलचस्प है, हालांकि यह मंदिर से भी पहले की है। ऐसा कहा जाता है कि भागसू एक स्थानीय प्रमुख था, और उसका क्षेत्र सूखे से

ग्रस्त था। उसने अपनी प्रजा से वादा किया कि वह पानी लाएगा। उनकी खोज उन्हें इन पहाड़ों पर ले आई, विशेष रूप से, एक झील - नाग दल - जो नाग राजा की थी। भागसू के पास स्वयं जादुई शक्तियां थीं। वह झील से पानी को एक कमंडलु में स्थानांतरित करने में कामयाब रहा, और घर वापस जाने के लिए चल पड़ा। सर्पों का राजा उस रात घर लौटा तो उसने अपनी झील को खाली पाया। कहने की जरूरत नहीं है, वह चिढ़ गया था, और वह जिम्मेदार व्यक्ति को खोजने के लिए निकल पड़ा। यहीं भागसू से उसकी भेंट हो गई, और भयानक युद्ध हुआ। भागसू घातक रूप से घायल हो गया, और कमंडलु गिर गया, जिससे पानी निकल गया, जो पहाड़ से नीचे बह गया। यह महसूस करते हुए कि उसका अंत निकट था, उसने सर्प राजा के सामने आत्मसमर्पण कर दिया, केवल यह माँगते हुए कि पानी को बहने दिया जाए, ताकि उसके लोगों को सूखे से राहत मिले, और उसका नाम हमेशा के लिए इस जगह से जुड़ा रहे। सर्प राजा ने मान लिया, और इसके बाद से, पानी मुक्त हो गया, और इस स्थान को उनके दोनों नामों के संयोजन के रूप में जाना जाने लगा- भागसू नाग।

कुणाल पथरी मंदिर, धर्मशाला

कुणाल पाथरी धर्मशाला में देवी दुर्गा को समर्पित एक छोटा चट्टानी मंदिर है। कांगड़ा जिले में सुंदर धौलाधार पर्वतमाला में स्थित, यह प्राचीन मंदिर घने चाय बागानों से घिरा हुआ है और हरे-भरे वातावरण के बीच लंबी शांतिपूर्ण सैर के लिए एक आदर्श स्थान है।मंदिर देवी-देवताओं की उत्कृष्ट नक्काशी को प्रदर्शित करता है। कहा जाता है कि मंदिर में एक ऐसा पत्थर है जो हमेशा गीला रहता है। स्थानीय किंवदंती के अनुसार, जैसे ही यह सूखना शुरू होता है, बारिश होती है। ऐसा माना जाता है कि जब भगवान शिव की पत्नी देवी सती की मृत्यु हुई थी, तो उनकी खोपड़ी इसी स्थान पर गिरी थी।इस लिए यहाँ देवी की पूजा की जाती है|

नागिनी माता मंदिर, नूरपुर

नागिनी माता का प्राचीन एवं ऐतिहासिक मंदिर नूरपुर से लगभग 10 किलोमीटर दूर गांव भडवार के समीप कोढ़ी-टीका गांव में स्थित नागिनी मंदिर, पहले घने जंगलों से घिरा हुआ स्थान हुआ करता था। बताया जाता है कि इस जंगल में कोढ़ से ग्रसित एक वृद्ध रहा करता था और कु ष्ठ रोग से मुक्ति के लिए भगवान से निरंतर प्रार्थना करता था। उसकी साधना सफल होने पर उसे नागिनी माता के दर्शन हुए तथा उसे नाले में दूध की धारा बहती दिखाई दी। स्वप्न टूटने पर उसने दूध की धारा वास्तविक रूप में बहती देखी जोकि वर्तमान में मंदिर के साथ

बहते नाले के रूप में है। माता के निर्देशानुसार उसने अपने शरीर पर मिट्टी सहित दूध का लेप किया और वह कोढ़ मुक्त हो गया। आज भी यह परिवार माता की सेवा करता है और माना जाता है कि उसके परिवार को माता की दिव्य शक्तियां प्राप्त हैं। इसी तरह एक अन्य कथा के अनुसार एक नामी सपेरे ने मंदिर में आकर धोखे से नागिनी माता को

अपने पिटारे में डालकर बंदी बना लिया। नागिनी माता ने क्षेत्रीय राजा को दर्शन देकर अपनी मुक्ति के लिए प्रार्थना की। वह सपेरा कंडवाल के पास आकर जैसे ही इस स्थल पर रुका तो राजा ने नागिनी माता को सपेरे से मुक्त करवाया। तब से इस स्थल को विषमुक्त होने की मान्यता मिली और सर्पदंश से पीड़ित लोग अपने इलाज के लिए यहां आने लगे। मंदिर के पुजारी के अनुसार माता कई बार सुनहरी रंग के सर्परूप में मंदिर परिसर में दर्शन देती है, जिसे देखकर बड़े आनंद की अनुभूति होती है । श्रद्धालु माता के मंदिर की मिट्टी 'जिसे शक्कर कहा जाता है' को बड़ी श्रद्धा व विश्वास के साथ घर ले जाते हैं ताकि घर में सांप तथा अन्य विषैले जंतुओं के प्रवेश का भय न रहे। इसके अलावा इस मिट्टी का उपयोग चर्म रोग के लिए औषधि के रूप में भी किया जाता है। मेले के दौरान श्रद्धालु नागिनी माता को दूध, खीर, फल इत्यादि व्यंजन अर्पित करके इसकी पूजा अराधना करते है।

जखणी माता मंदिर, पालमपुर

जखणी माता का मंदिर ,पालमपुर के चन्दपुर गांव से उपर , पालमपुर से 7 किलोमीटर की दूरी पे धौलाधार की पहाड़ी पे स्थित है। माता की प्रतिमा 450 वर्ष पूर्व यहाँ एक गद्दी परिवार द्वारा स्थापित की गयी थी । इस मंदिर जखणी माता इसी परिवार की कुलदेवी थी। मान्यता है की देवी एक टांग से हीन हैं। इसका

प्रमाण देवी माँ का गुर है। जब किसी में देवी का प्रवेश होता है, तो वह एक टांग से मंदिर की परिक्रमा करता है। लोगों की देवी के प्रति गहन आस्था है| यहाँ जाने पर एक अलग सी शांति और पहाड़ों की सुंदरता का अनुभव होता है।

मिनाक्षी

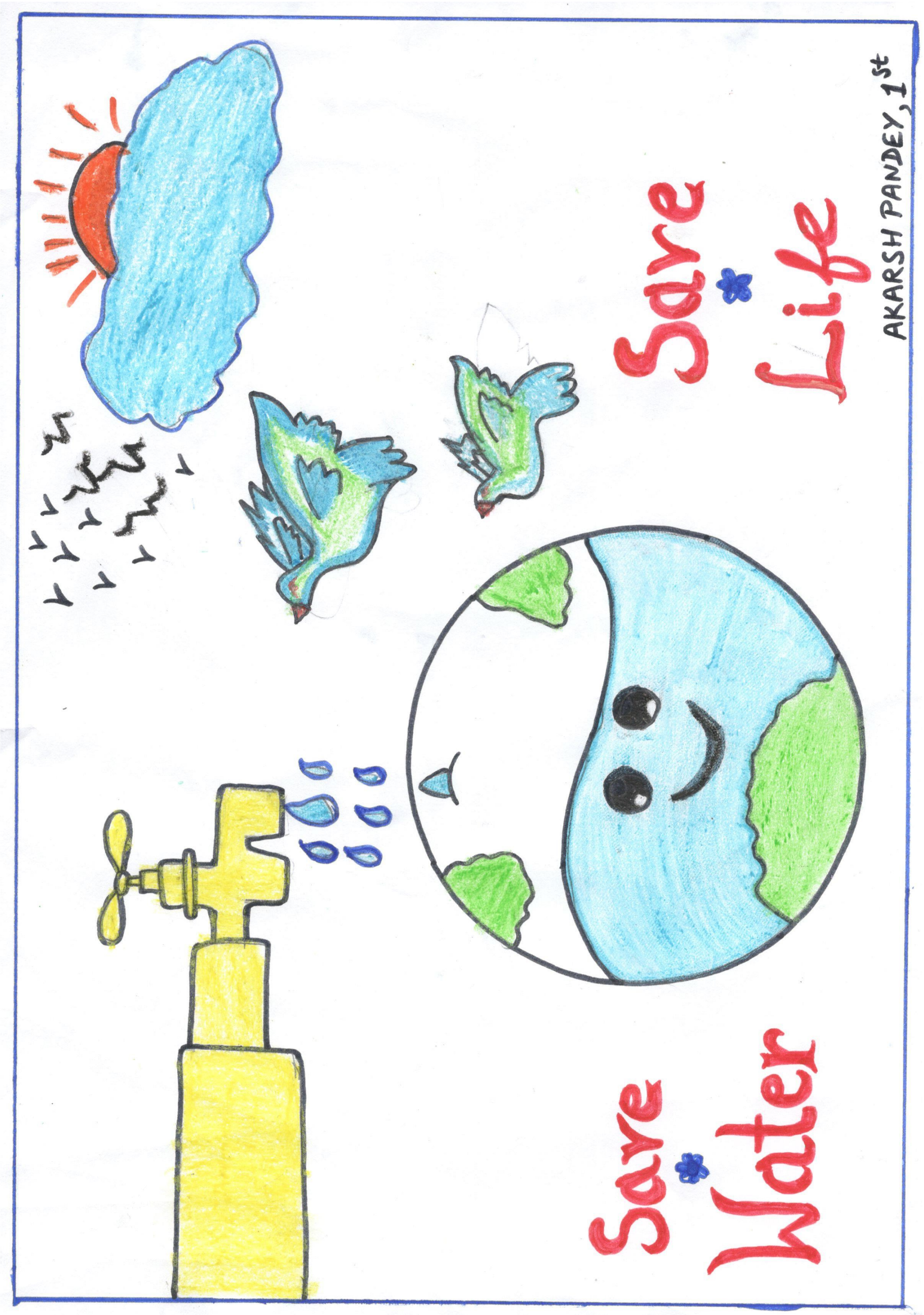

अकर्ष पांडे

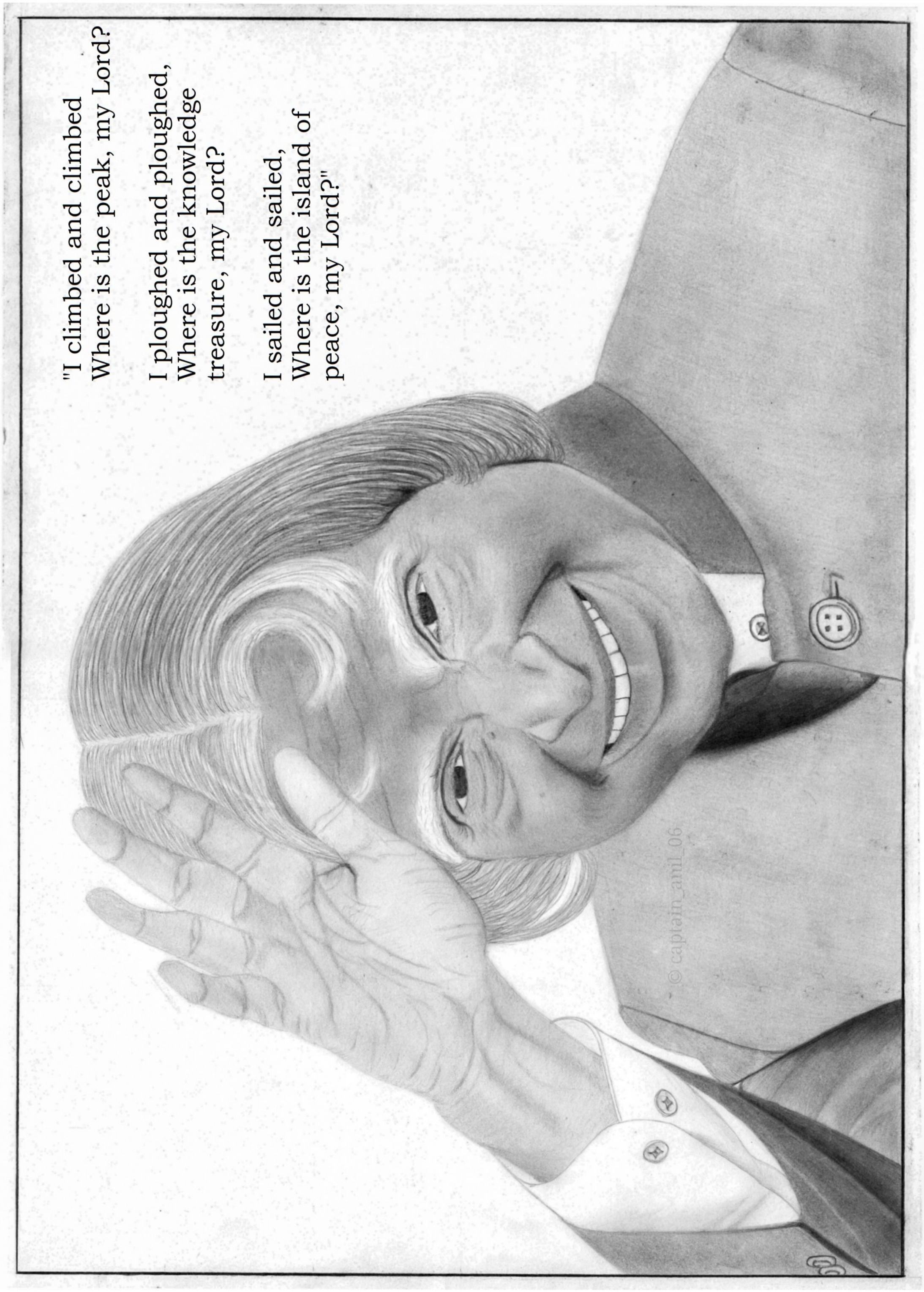
"I climbed and climbed
Where is the peak, my Lord?
I ploughed and ploughed,
Where is the knowledge
treasure, my Lord?
I sailed and sailed,
Where is the island of
peace, my Lord?"

अनिल कुमार

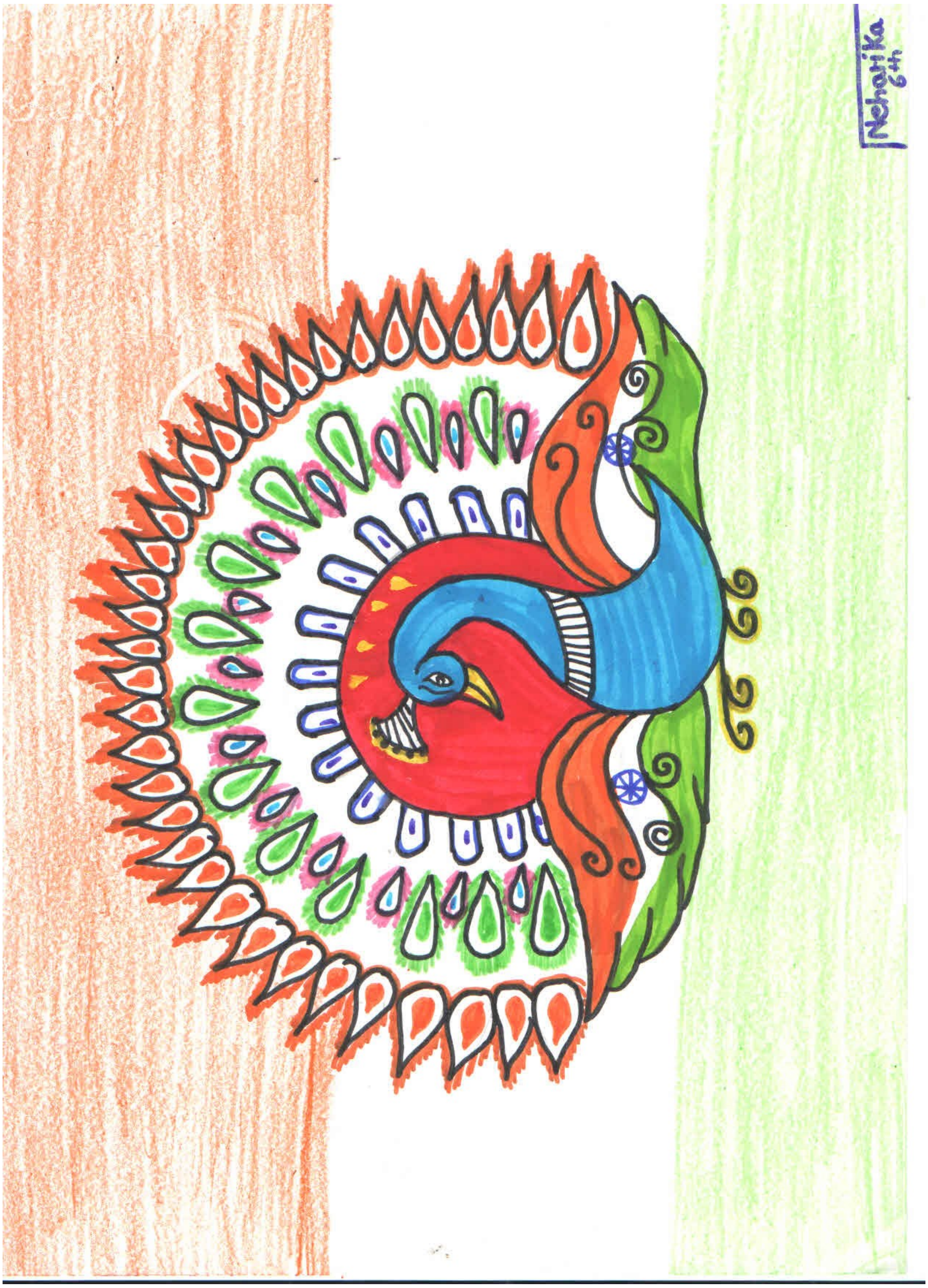

नेहारिका गुप्ता

वामीका पांडे

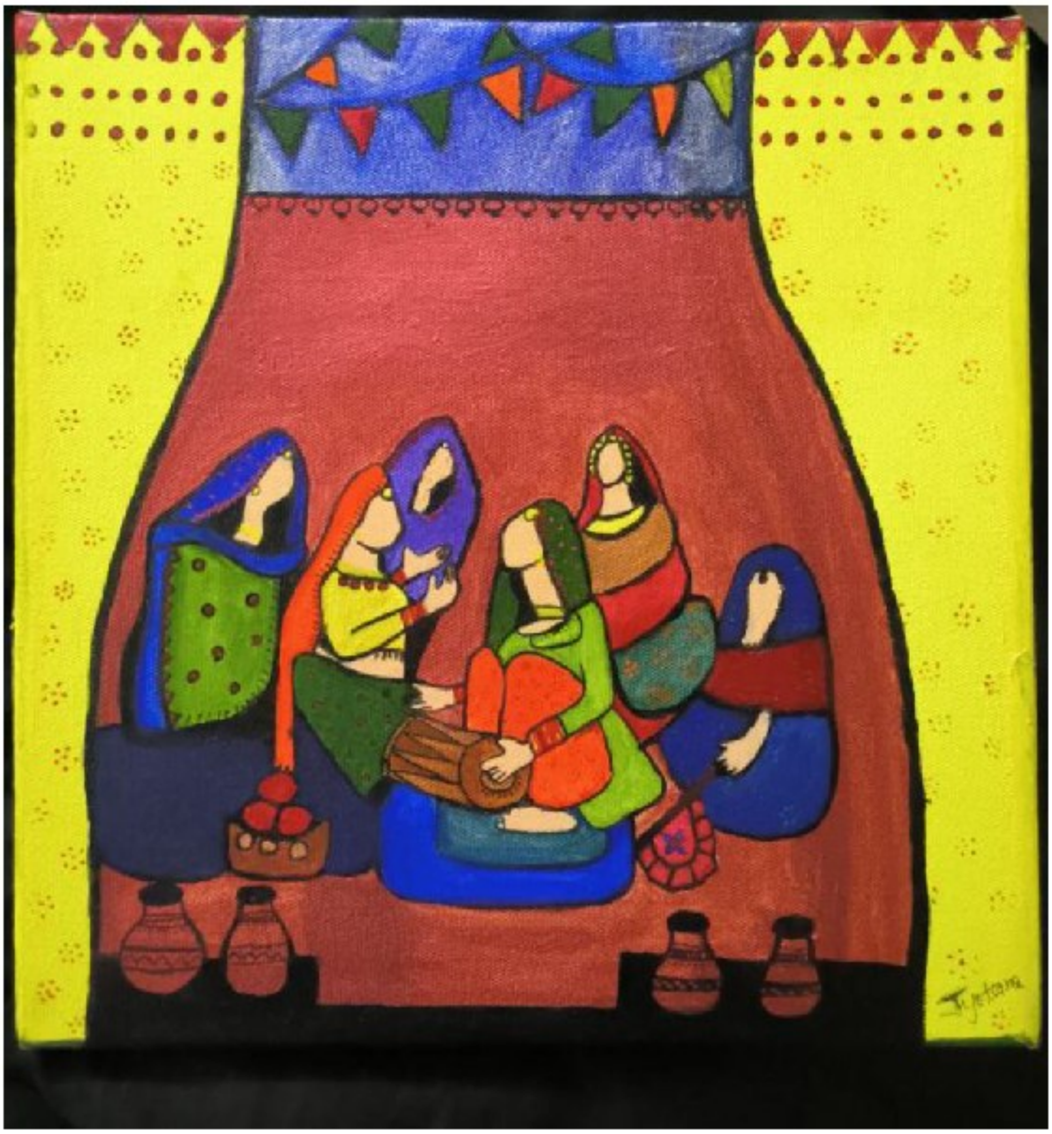

1

ज्योत्सना

घ्रताशी नड़्ड़ा

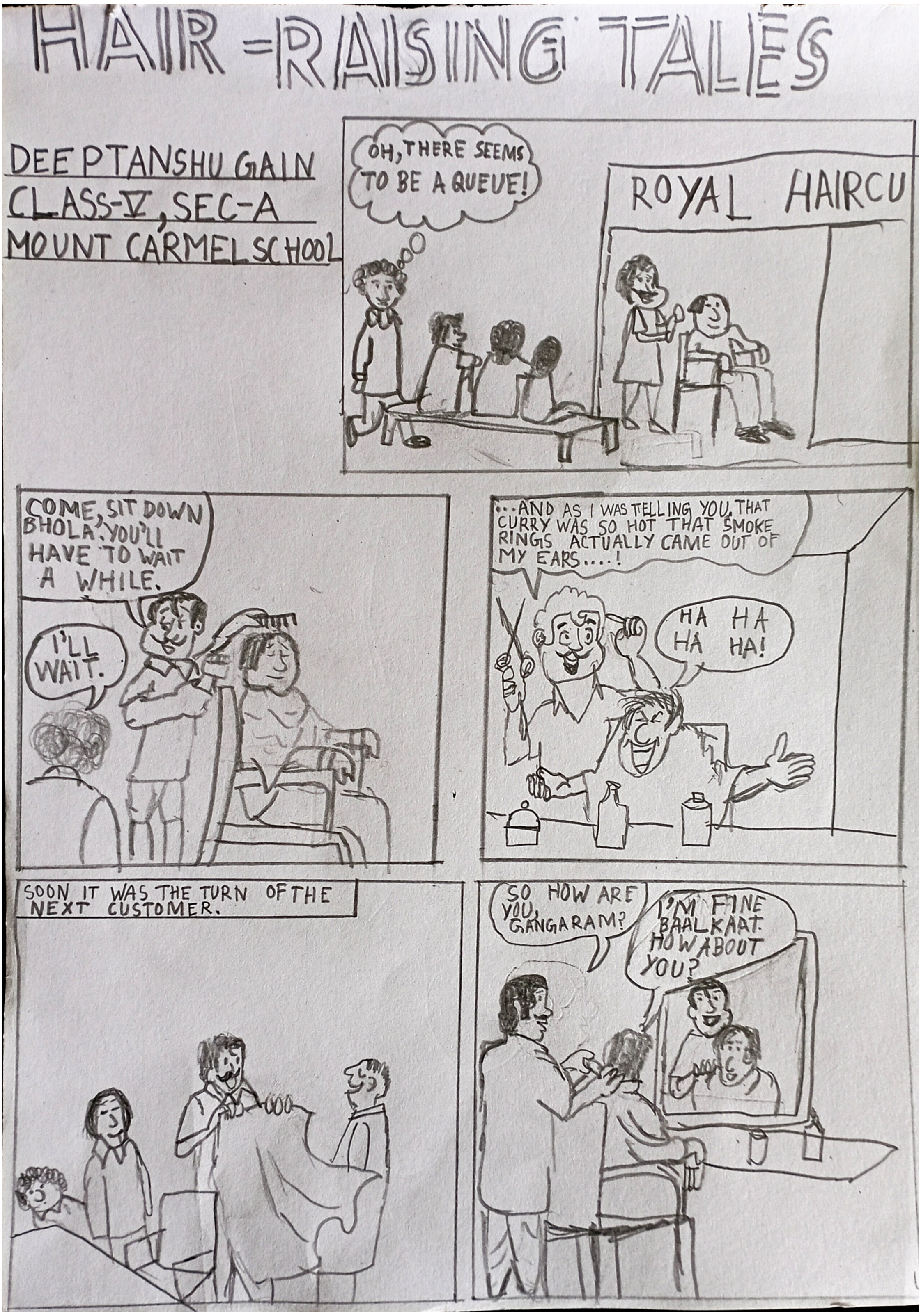
HAIR-RAISING TALES
DEEPTANSHU GAIN
CLASS-V, SEC-A
MOUNT CARMEL SCHOOL
OH, THERE SEEMS TO BE A QUEUE!
ROYAL HAIRCU
COME, SIT DOWN BHOLA. YOU'LL HAVE TO WAIT A WHILE.
I'LL WAIT.
...AND AS I WAS TELLING YOU, THAT CURRY WAS SO HOT THAT SMOKE RINGS ACTUALLY CAME OUT OF MY EARS....!
HA HA HA HA!
SOON IT WAS THE TURN OF THE NEXT CUSTOMER.
SO HOW ARE YOU, GANGARAM?
I'M FINE BAALKAAT. HOW ABOUT YOU?

दीप्तांशु गाइन

देवांगना गाइन

दिव्यम नड़्ड़ा

प्रिशा

वैदिक सूद

प्रिशा

CSIR-IHBT Winning Cricket Team of the 51st Shanti Swarup Bhatnagar Memorial Tournament (SSBMT) zonal final held at CSIR-CIMAP in Lucknow, India